मोहब्बत का कोई रंग नही फिर भी वो रंगीन है
प्यार का कोई चेहरा नही फिर भी वो हसीन हैं...

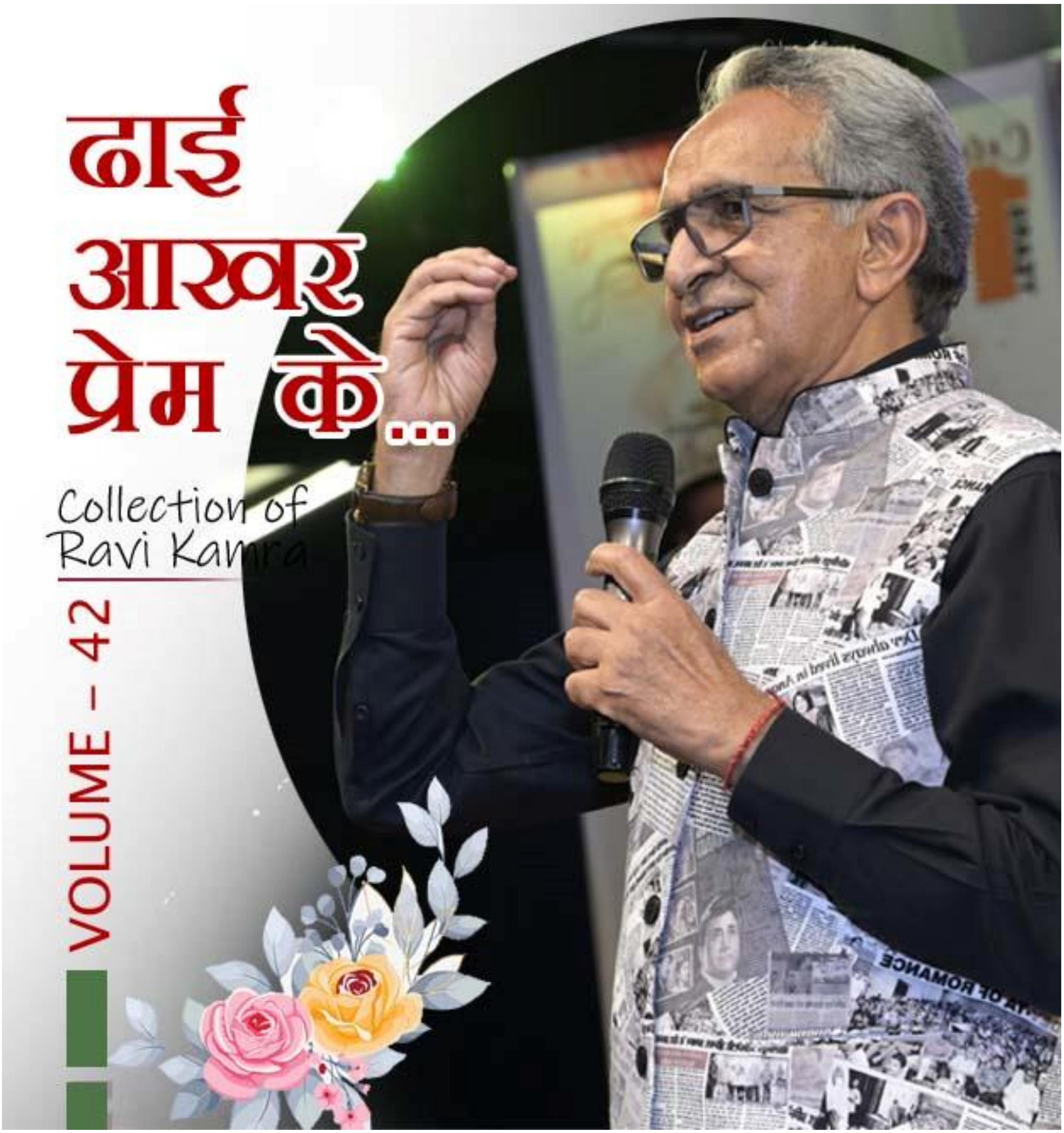

तुम कहते हो कि तुम्हें
बारिश से प्यार है
लेकिन उसमें चलने के लिए
तुम छाता इस्तेमाल करते हो

तुम कहते हो तुम्हें हवा से प्यार है
लेकिन जब वो आती है तो
तुम खिड़कियां बंद कर देते हो

इसलिए मैं डरता हूँ
जब तुम कहते हो
कि तुम मुझे प्यार करते हो ।
(तुर्किश कविता)

मोहब्बत का कोई रंग नही फिर भी वो रंगीन है
प्यार का कोई चेहरा नही फिर भी वो हसीन हैं...

मुझे खींच ही लेती है हर बार उसकी मोहब्बत....
वरना बहुत बार मिली हूँ आखिरी बार उससे..!!💕

उन दोनों की गुफ्तगू का ढंग अनोखा होता है
शब्द उसके होंटों में बंद रहते हैं और
अर्थ उनका आँखों में दबा-दबा सा रहता है

चाय की प्याली भरो ,
बालकनी मैं कुर्सी रखो,
बैठो ज़रा
इत्मीनान से
गुज़ार लो कुछ पल
अपने साथ

उम्र गुजरी है मांजते खुद को
साफ़ हैं पर चमक नहीं पाए

चलो ना साथ चलते हैं समंदर के किनारे तक
किनारे पर ही देखेंगे किनारा कौन करता है

लगता तो बेखबर सा हूँ !! लेकिन खबर में हूँ
तेरी नज़र में हूँ , तो मैं सबकी नज़र में हूँ ---निदा फाजली

बहुत कुछ जान के जाना है तुमको
बड़ी मुश्किल से पहचाना है तुमको
मुझे जो तुम समझते हो गलत है!

किसी दिन ये भी समझाना है तुमको ---शकील आज़मी

वो हिसाब का उसूल होता होगा
के दो में से एक निकालो तो एक बचता है
मुहब्बत के उसूल कुछ और हैं
यहाँ दो में से एक निकालो तो एक भी नहीं बचता

के तू अगर सलीके से तोड़ता मुझको
मेरे टुकड़े भी तेरे काम आते !!!

बता कहाँ से लाऊँ इतना सब्र के
तू बात न करे और मुझे फर्क न पड़े

हमें भी शौक न था दास्ताँ सुनाने का
फराज़ उसने भी पूछा था हाल वैसे ही

मैं आरज़ू तो नहीं हूँ मगर तू पाल के देख
मुहब्बतों में कोई रास्ता निकाल के देख
मैं अपने दोनों तरफ एक सा हूँ तेरे लिए
किसी से शर्त लगा फिर मुझे उछाल के देख

- मैं समंदर भी किसी गैर के हाथों से न लूँ
  एक कतरा भी समंदर है अगर तू दे दे

- भूलना मेरी आदत नहीं मुर्शद
  यादाशत चली जाये तो अलग बात है
  अपनों को याद न करना मेरी फितरत नहीं
  अपने ही बदल जायें तो अलग बात है

- ख्वाहिश है ये के पूरी ये ख्वाहिश हो जाये
  वो छाता एक लाए और ऊपर से बारिश हो जाये

- उम्मीद के आगे टूट जाना अच्छा नहीं लगता
  किसी के आगे हाथ फैलाना अच्छा नहीं लगता
  मुझे देने वालों की कतार में रखना मेरे मालिक
  तेरे दर के सिवा कहीं सर झुकाना अच्छा नहीं लगता

- ये दो पल जो तुम्हारे साथ गुज़रे हैं
  जाने कितने बरस हमारे काम आयेंगे
- उनसे बात ही नहीं हुई सुबह से

कि सुबह ही नहीं हुई सुबह से

किसी रोज़ बारिश जो आये
समझ लेना बूंदों में मैं हूँ
सुबह धूप तुमको सताए
समझ लेना किरणों में मैं हूँ
मैं रहूँ या न रहूँ
तुम मुझमें कहीं बाकी रहना
बस इतना सा था तुमसे कहना

मतले जैसे होंठ हैं
मक़्ते जैसे नैन ।
इसी ग़ज़ल ने हर लिया
मेरा सारा चैन ।।———लोकेश कुमार सिंह साहिल

सच्चे प्रेम का रिश्ता पुरानी किताब जैसा ही रहता है
जिसका हर शब्द वैसा ही रहता है.. कुछ बदलता नहीं ..

जहाँ चाय वहाँ राय

बड़े ख़ूबसूरत होते हैं वो लोग..
जो वक़्त पड़ने पर वक़्त देते हैं

नज़रें मिली तो बात नहीं कर सकूँगा मैं
दो काम एक साथ नहीं ए कर सकूँगा मैं

ज़िन्दगी में एक समय आता है
जब तय करना होता है
कि पन्ना पलटना है
या किताब ही बन्द करनी है

माँ की तरह कोई और ख़याल रख सके
यह तो बस ख़याल ही हो सकता है

रात भर खुशबुओं में मैँ डूबा
सोचते सोचते सो गया था तुम्हें !!

जिनसे बातें ख़त्म ही नहीं होती थी
उनसे बात ही ख़त्म हो गई

- आराम छोड़ना पड़ता है
  आराम कमाने के लिए

- कितना भी मिलो
  मन नहीं भरता
  मंदिर के प्रसाद की
  तरह हो तुम

- पा लेने की बेचैनी
  और खो देने का डर....
  बस इतना ही हैए
  ज़िन्दगी का सफर.....

- मेरी मुस्कुराहट के लिए तो बस
  तेरी यादों की आहट ही काफी है

- कहने वालों का क्या जाता है
  कमाल तो सहने वाले करते हैं

मेरा घर जलाने वाले मुझे फिक्र है तेरी भी
हवा का रुख़ जो बदला तेरा घर भी जल न जाए

और 'फ़राज़' चाहिएँ कितनी मोहब्बतें तुझे
माओं ने तेरे नाम पर बच्चों का नाम रख दिया

एक ही शख़्स समझता था मुझे
फिर ये हुआ कि वो भी समझदार हो गया

बादल बूँद-बूँद बिखरा
और बारिश हो गया
कवि भी कोई
संवेदनाओं से भरा बादल ही होगा
बूँद-बूँद बिखरता है
न जाने कितने भावों में
और सींचता है बंजर होती मनुष्यता ।
.हेमन्त

जिनके किरदार से आती हो सदाक़त की महक
उनकी तदरीस से पत्थर भी पिघल सकते हैं

राह भी होगी और रौशनी भी

एक फ़क़त तुम्हारे चल पड़ने की देर है

साइकल भी समझती थी मुहब्बत की राहे
चैन भी उतरती थी तो मोहल्ले में उसके

यह इश्क-ओ-मोहब्बत की रवायत भी अजीब है*ए
'पाया नहीं है जिसको उसे खोना भी नहीं चाहते* !!

पता करो के बकाया किधर गया हूँ मैंएए
वो कह रहा है मुकम्मल नहीं मिला उसको…!!

कितना अच्छा होता
अगर सब कुछ अच्छा होता ..---संजीव शाद

दिल में हमेशा शोर मचाते है…
खामोशी से चले जाने वाले…

बिछड़ना प्रेम की समाप्ति नहीं

समाप्ति है
पास रह के भी प्रेम न समझ पाना

वो बदले तो हम कहाँ पुराने रहे
वो आने से रहे हम बुलाने से रहे

नदी क्यूं चली जाती है
पहाड़ को छोड़ कर
समंदर की तलाश में

पहाड़ क्यूं नहीं दिखा सका कभी
नदी को
उसकी कठोरता के पीछे छिपे
कोमल हृदय से फूटती प्रेम की कोंपले

शायद नदी की नियति है
एक ठहराव की तलाश

शायद पहाड़ बर्फ़ होता गया
इसीलिए
कि नदी में बनी रहे नमी
उसके प्रेम की।

आइना साफ़ किया तो मैं नज़र आया
मैं को साफ़ किया तो तू नज़र आया

उनको शौक़ बहुत है उंगलियाँ उठाने का...
उनके सामनेए इक आईना ज़रुरी हैं...

चाहता हूँ भूल जाऊँ उसे
मुझे याद ही नहीं रहता

किसी को अपना बनानाए सौदा हो सकता है ए लेकिन....
किसी का हो जानाए कोरा इश्क़ है....!!

जिस सिम्त भी देखूँ नज़र आता है कि तुम हो
ऐ जान-ए-जहाँ ये कोई तुम सा है कि तुम हो

ये ख़्वाब है ख़ुशबू है कि झोंका है कि पल है
ये धुँद है बादल है कि साया है कि तुम हो"

आज टूट गया हूँ तो बच के निकलते हो

कल आईना था तो रुक रुक के देखते थे

अगले जन्म में
तुम कागज़ बन जाना
मैं बनूँगा कलम
तब तुम धरती सा उपजाऊ बन जाना
मैं भी हल की तरह चलूँगा
तब ज़रूर लहलहाएगी कविता की फसल

तुम ही मेरी
पसंदीदा किताब हो

किसी को तो रास आयेंगे हम भी
कोई तो होगा जिसे सादगी पसंद होगी

जिनसे बातें ही खत्म नहीं होतीं थीं
उनसे बात ही खत्म हो गयी

तेरी इक ख़ामोशी से

बहुत शोर हो जाता है जिंदगी में

- मज़ा तो तब है कि हार के भी हँसते रहो
  हमेशा जीत ही जाना कमाल थोड़ी है

- तुम्हे मदद के लिए जब दुहाई देने लगा
  तुम्हारी आँख में क्या है दिखाई देने लगा

- जिंदगी मैंने गुजारी ही नहीं सभी की तरह
  मैंने हर पल को जिया है इक सदी की तरह

- ख़ामोशी हल नहीं मसलों का
  गुफ्तगू हर दरवाज़े खोल देती है

- ये आईने तुझे तेरी खबर क्या देंगे फ़राज़

आ देख मेरी आँखों में के तू कितना हसीन है

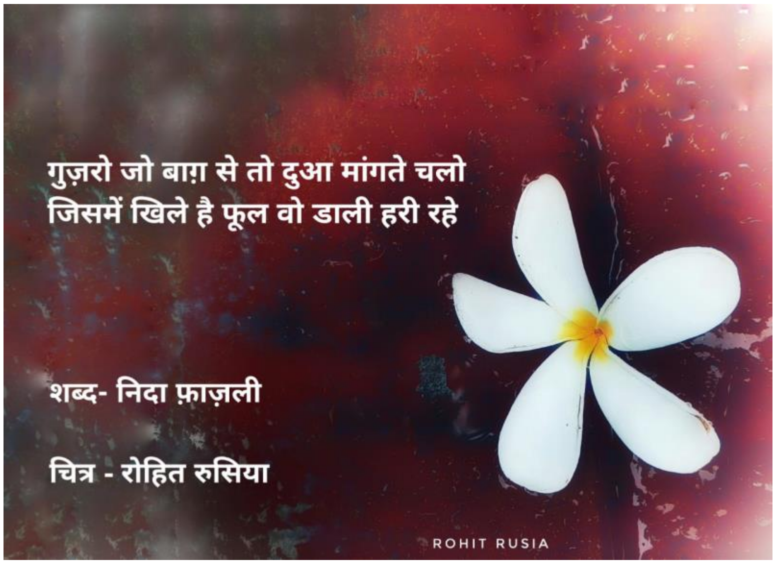

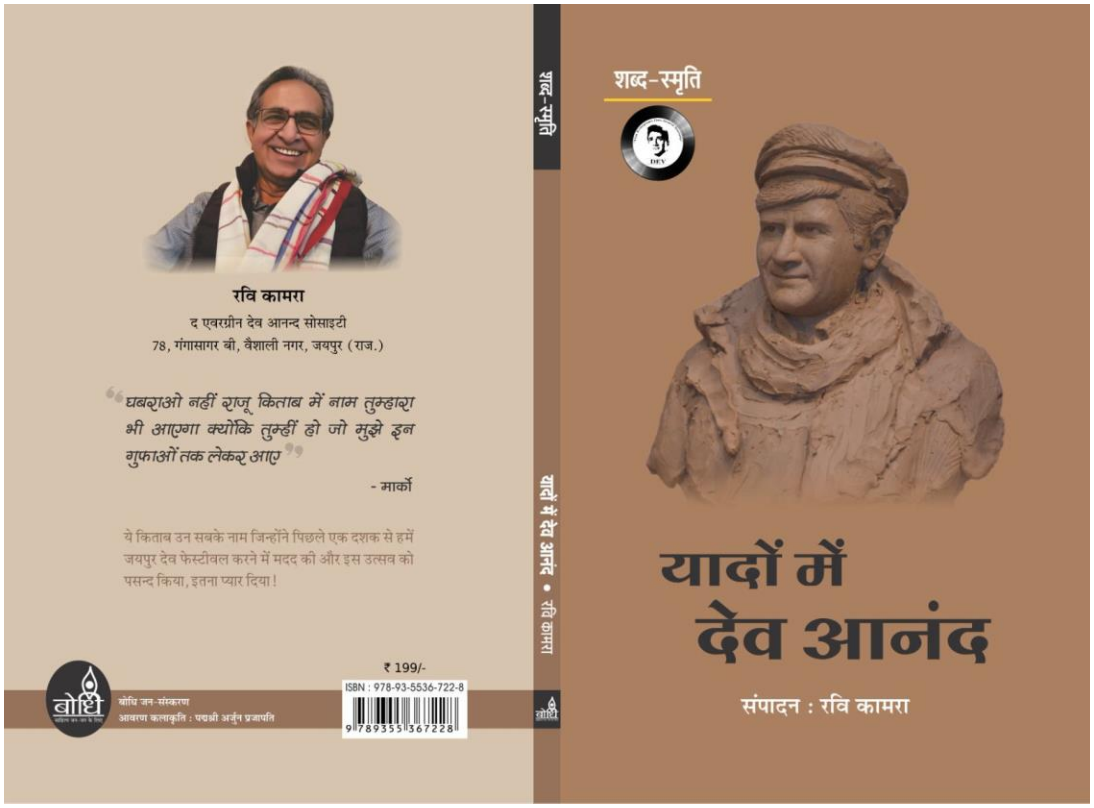

दिल की बात...
दिल से सुनें
दिल का करें
दिल से करें
दिल खोल कर हंसे
दिल खोल कर जीएँ
जब मुश्किल आ जाए
दिल छोटा न करें...